



Aaramya

18 Oct 2025

08:58 PM

Kurukshetra

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121656801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 18/10/2025
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 20:58:00 घंटे
इष्ट _____: 36:18:28 घटी
स्थान _____: Kurukshetra
राज्य _____: Haryana
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:59:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:51:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:22:36 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:35:24 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:53 घंटे
साम्पातिक काल _____: 22:24:53 घंटे
सूर्योदय _____: 06:26:36 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:48:35 घंटे
दिनमान _____: 11:21:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 01:17:27 तुला
लग्न के अंश _____: 27:03:31 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: उ०फाल्गुनी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: ब्रह्म
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टे-टेस्टी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	आश्विन	26
पंजाबी	संवत : 2082	कार्तिक	2
बंगाली	सन् : 1432	कार्तिक	1
तमिल	संवत : 2082	आइपसी	2
केरल	कोल्लम : 1201	तुलम	1
नेपाली	संवत : 2082	कार्तिक	2
चैत्रादि	संवत : 2082	कार्तिक	कृष्ण 12
कार्तिकादि	संवत : 2082	आश्विन	कृष्ण 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 12:19:23
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:41:37 घंटे
जन्म योग _____ : उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____ : 25:47:44 घंटे
जन्म योग _____ : ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 12:19:23 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 13:10:58
भभोग _____ : 65:19:50
भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 4 वर्ष 9 मा 11 दि

घात चक्र

मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

Pt.Rahul Sharma

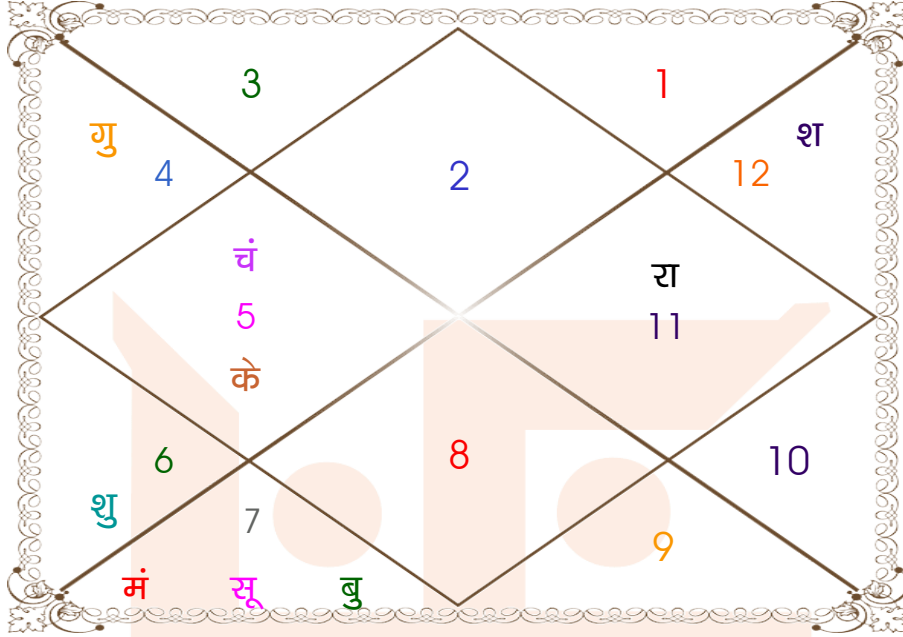
Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

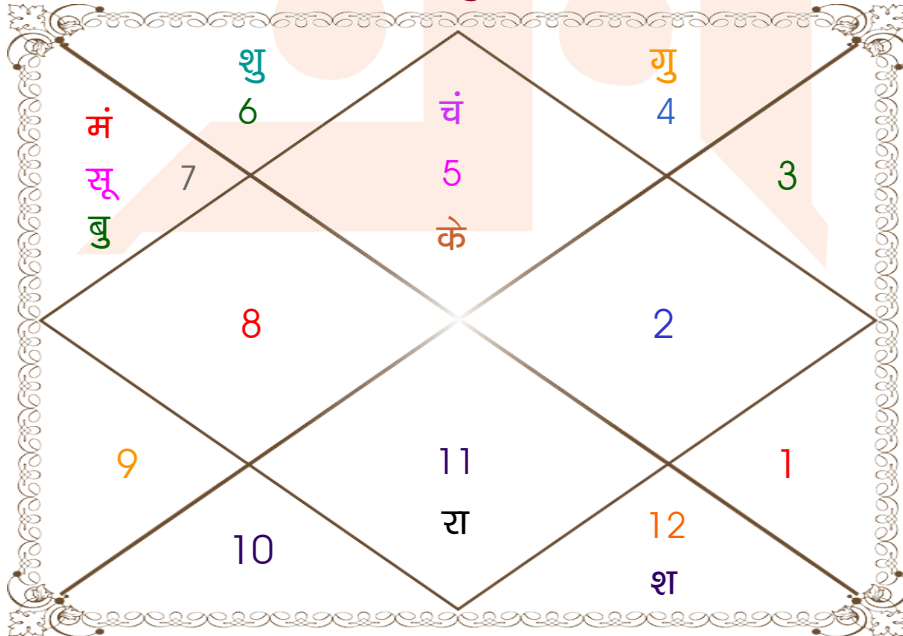
rs96531@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श	ल		
रा		गु	
		के चं	
		बु सू मं	शु

लग्न कुंडली

ल	श		
	रा		
गु			
चं के	मं सू बु		शु

विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 9मा 11दि
सूर्य

18/10/2025

01/08/2144

सूर्य	31/07/2030
चन्द्र	31/07/2040
मंगल	31/07/2047
राहु	31/07/2065
गुरु	31/07/2081
शनि	01/08/2100
बुध	01/08/2117
केतु	01/08/2124
शुक्र	01/08/2144

योगिनी
सिद्धा 5वर्ष 6मा 29दि
सिद्धा

18/10/2025

18/05/2031

	18/10/2025
संकटा	18/04/2027
मंगला	28/06/2027
पिंगला	17/11/2027
धान्या	17/06/2028
भामरी	28/03/2029
भद्रिका	18/03/2030
उल्का	18/05/2031

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

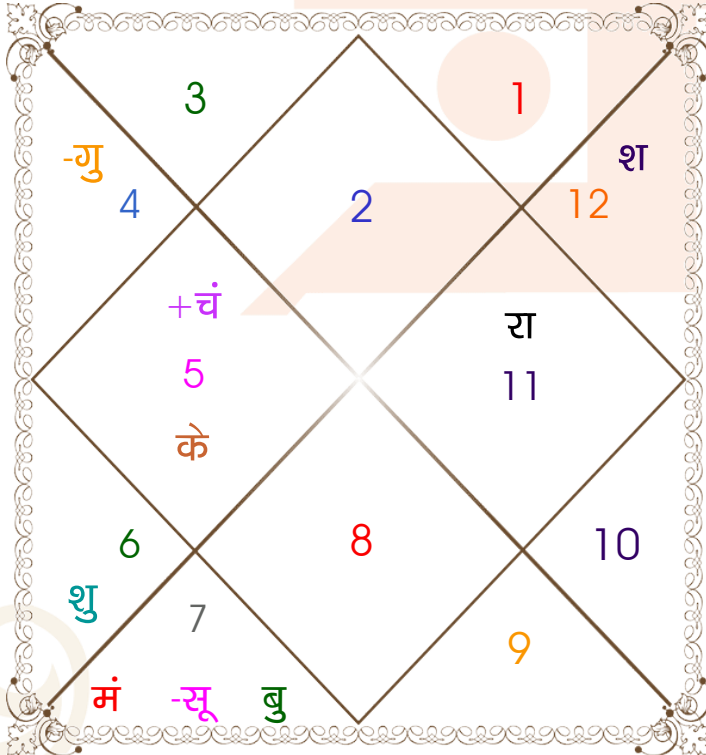
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	27:03:31	347:03:42	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	गुरु	---
सूर्य			तुला	01:17:27	00:59:36	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	नीच राशि
चंद्र			सिंह	29:22:20	12:17:43	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	मित्र राशि
मंगल			तुला	23:49:12	00:41:57	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	सम राशि
बुध			तुला	22:48:31	01:19:55	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	मित्र राशि
गुरु			कर्क	00:00:13	00:04:33	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	उच्च राशि
शुक्र			कन्या	11:41:27	01:14:38	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	नीच राशि
शनि	व		मीन	02:18:15	00:03:45	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	23:45:52	00:00:45	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	23:45:52	00:00:45	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	06:31:44	00:01:54	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मीन	05:52:18	00:01:28	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	07:09:12	00:00:08	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			कुंभ	10:07:55	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	गुरु	--

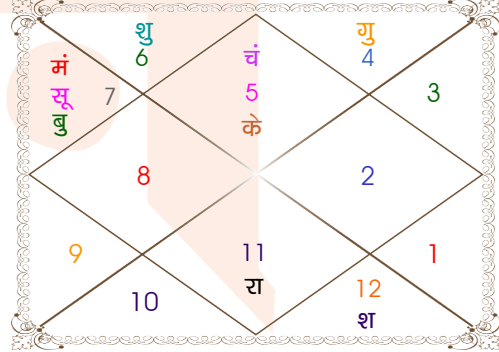
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:06

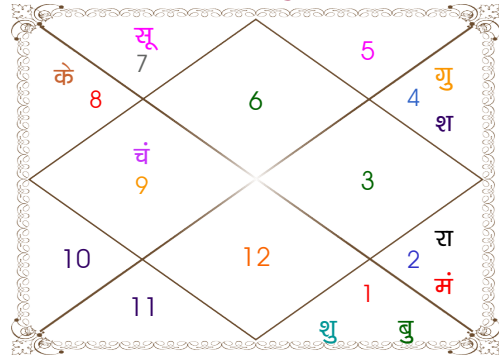
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 09:14:15	वृष 27:03:31
2	मिथुन 09:14:15	मिथुन 21:24:59
3	कर्क 03:35:43	कर्क 15:46:27
4	कर्क 27:57:11	सिंह 10:07:55
5	सिंह 27:57:11	कन्या 15:46:27
6	तुला 03:35:43	तुला 21:24:59
7	वृश्चिक 09:14:15	वृश्चिक 27:03:31
8	धनु 09:14:15	धनु 21:24:59
9	मकर 03:35:43	मकर 15:46:27
10	मकर 27:57:11	कुम्भ 10:07:55
11	कुम्भ 27:57:11	मीन 15:46:27
12	मेष 03:35:43	मेष 21:24:59

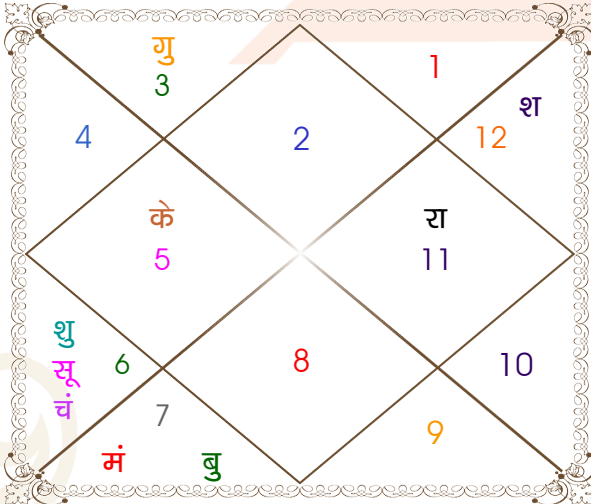
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	27:03:31
2	मिथुन	20:04:37
3	कर्क	13:17:06
4	सिंह	10:07:55
5	कन्या	13:10:27
6	तुला	20:59:07
7	वृश्चिक	27:03:31
8	धनु	20:04:37
9	मकर	13:17:06
10	कुम्भ	10:07:55
11	मीन	13:10:27
12	मेष	20:59:07

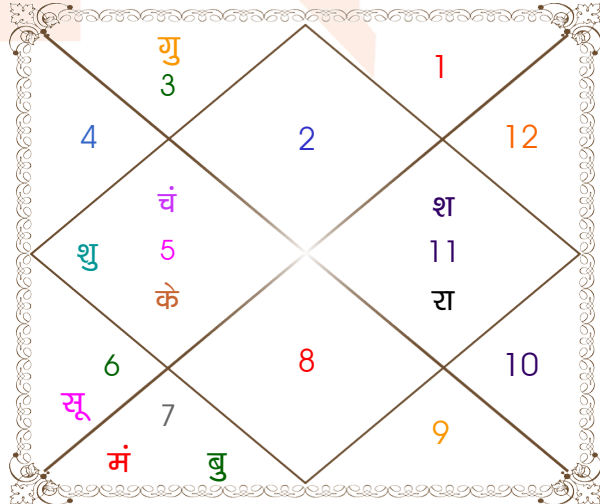
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

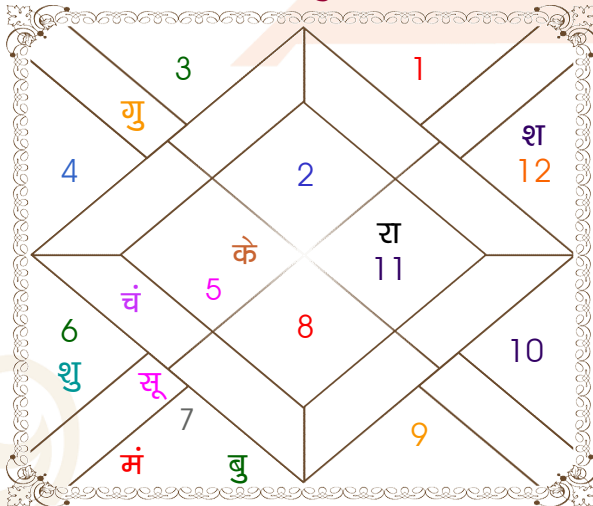
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	बाल	भीत	प्रकाश	0.48	16 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	मुदित	उपवेशन	4.24	89 %
मंगल	अमात्य	भातृ	वृद्ध	शक्त	उपवेशन	2.86	52 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	वृद्ध	मुदित	आगमन	5.27	73 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	दीप्त	शयन	20.42	45 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	वृद्ध	भीत	उपवेशन	0.91	25 %
शनि	पुत्र	आयु	मृत	निपीदित	भोजन	0.66	58 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	आगमन	0.00	23 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	उपवेशन	0.00	23 %
कुल						34.84	

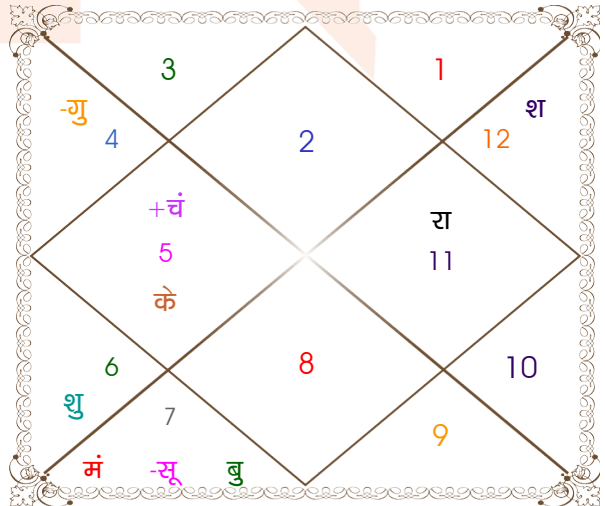
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 9 मास 11 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
18/10/2025	31/07/2030	31/07/2040	31/07/2047	31/07/2065
31/07/2030	31/07/2040	31/07/2047	31/07/2065	31/07/2081
00/00/0000	चंद्र 01/06/2031	मंगल 27/12/2040	राहु 13/04/2050	गुरु 18/09/2067
00/00/0000	मंगल 31/12/2031	राहु 14/01/2042	गुरु 05/09/2052	शनि 31/03/2070
18/10/2025	राहु 01/07/2033	गुरु 21/12/2042	शनि 13/07/2055	बुध 06/07/2072
राहु 18/08/2026	गुरु 31/10/2034	शनि 30/01/2044	बुध 30/01/2058	केतु 12/06/2073
गुरु 07/06/2027	शनि 31/05/2036	बुध 26/01/2045	केतु 17/02/2059	शुक्र 11/02/2076
शनि 19/05/2028	बुध 30/10/2037	केतु 24/06/2045	शुक्र 17/02/2062	सूर्य 29/11/2076
बुध 25/03/2029	केतु 31/05/2038	शुक्र 25/08/2046	सूर्य 12/01/2063	चंद्र 31/03/2078
केतु 31/07/2029	शुक्र 30/01/2040	सूर्य 30/12/2046	चंद्र 12/07/2064	मंगल 07/03/2079
शुक्र 31/07/2030	सूर्य 31/07/2040	चंद्र 31/07/2047	मंगल 31/07/2065	राहु 31/07/2081

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
31/07/2081	01/08/2100	01/08/2117	01/08/2124	01/08/2144
01/08/2100	01/08/2117	01/08/2124	01/08/2144	00/00/0000
शनि 03/08/2084	बुध 28/12/2102	केतु 28/12/2117	शुक्र 01/12/2127	सूर्य 18/11/2144
बुध 13/04/2087	केतु 26/12/2103	शुक्र 27/02/2119	सूर्य 30/11/2128	चंद्र 20/05/2145
केतु 22/05/2088	शुक्र 25/10/2106	सूर्य 05/07/2119	चंद्र 01/08/2130	मंगल 25/09/2145
शुक्र 22/07/2091	सूर्य 01/09/2107	चंद्र 03/02/2120	मंगल 01/10/2131	राहु 19/10/2145
सूर्य 03/07/2092	चंद्र 30/01/2109	मंगल 01/07/2120	राहु 01/10/2134	00/00/0000
चंद्र 02/02/2094	मंगल 28/01/2110	राहु 20/07/2121	गुरु 01/06/2137	00/00/0000
मंगल 13/03/2095	राहु 16/08/2112	गुरु 26/06/2122	शनि 01/08/2140	00/00/0000
राहु 17/01/2098	गुरु 22/11/2114	शनि 04/08/2123	बुध 02/06/2143	00/00/0000
गुरु 01/08/2100	शनि 01/08/2117	बुध 01/08/2124	केतु 01/08/2144	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 4 वर्ष 9 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु
18/10/2025	18/08/2026	07/06/2027	19/05/2028	25/03/2029
18/08/2026	07/06/2027	19/05/2028	25/03/2029	31/07/2029
राहु 12/11/2025	गुरु 26/09/2026	शनि 01/08/2027	बुध 02/07/2028	केतु 02/04/2029
गुरु 26/12/2025	शनि 12/11/2026	बुध 19/09/2027	केतु 20/07/2028	शुक्र 23/04/2029
शनि 16/02/2026	बुध 23/12/2026	केतु 09/10/2027	शुक्र 09/09/2028	सूर्य 29/04/2029
बुध 03/04/2026	केतु 09/01/2027	शुक्र 06/12/2027	सूर्य 25/09/2028	चंद्र 10/05/2029
केतु 23/04/2026	शुक्र 27/02/2027	सूर्य 23/12/2027	चंद्र 21/10/2028	मंगल 17/05/2029
शुक्र 16/06/2026	सूर्य 13/03/2027	चंद्र 21/01/2028	मंगल 08/11/2028	राहु 06/06/2029
सूर्य 03/07/2026	चंद्र 07/04/2027	मंगल 10/02/2028	राहु 25/12/2028	गुरु 23/06/2029
चंद्र 30/07/2026	मंगल 24/04/2027	राहु 02/04/2028	गुरु 04/02/2029	शनि 13/07/2029
मंगल 18/08/2026	राहु 07/06/2027	गुरु 19/05/2028	शनि 25/03/2029	बुध 31/07/2029
सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु
31/07/2029	31/07/2030	01/06/2031	31/12/2031	01/07/2033
31/07/2030	01/06/2031	31/12/2031	01/07/2033	31/10/2034
शुक्र 30/09/2029	चंद्र 26/08/2030	मंगल 13/06/2031	राहु 22/03/2032	गुरु 03/09/2033
सूर्य 18/10/2029	मंगल 12/09/2030	राहु 15/07/2031	गुरु 03/06/2032	शनि 20/11/2033
चंद्र 18/11/2029	राहु 28/10/2030	गुरु 12/08/2031	शनि 29/08/2032	बुध 28/01/2034
मंगल 09/12/2029	गुरु 08/12/2030	शनि 15/09/2031	बुध 14/11/2032	केतु 25/02/2034
राहु 02/02/2030	शनि 25/01/2031	बुध 15/10/2031	केतु 16/12/2032	शुक्र 17/05/2034
गुरु 22/03/2030	बुध 09/03/2031	केतु 28/10/2031	शुक्र 18/03/2033	सूर्य 10/06/2034
शनि 19/05/2030	केतु 27/03/2031	शुक्र 02/12/2031	सूर्य 14/04/2033	चंद्र 21/07/2034
बुध 10/07/2030	शुक्र 16/05/2031	सूर्य 13/12/2031	चंद्र 30/05/2033	मंगल 18/08/2034
केतु 31/07/2030	सूर्य 01/06/2031	चंद्र 31/12/2031	मंगल 01/07/2033	राहु 31/10/2034
चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य
31/10/2034	31/05/2036	30/10/2037	31/05/2038	30/01/2040
31/05/2036	30/10/2037	31/05/2038	30/01/2040	31/07/2040
शनि 30/01/2035	बुध 12/08/2036	केतु 12/11/2037	शुक्र 10/09/2038	सूर्य 08/02/2040
बुध 22/04/2035	केतु 11/09/2036	शुक्र 17/12/2037	सूर्य 10/10/2038	चंद्र 23/02/2040
केतु 26/05/2035	शुक्र 07/12/2036	सूर्य 28/12/2037	चंद्र 30/11/2038	मंगल 05/03/2040
शुक्र 30/08/2035	सूर्य 01/01/2037	चंद्र 15/01/2038	मंगल 04/01/2039	राहु 01/04/2040
सूर्य 28/09/2035	चंद्र 14/02/2037	मंगल 27/01/2038	राहु 06/04/2039	गुरु 26/04/2040
चंद्र 15/11/2035	मंगल 16/03/2037	राहु 28/02/2038	गुरु 26/06/2039	शनि 25/05/2040
मंगल 19/12/2035	राहु 01/06/2037	गुरु 28/03/2038	शनि 30/09/2039	बुध 20/06/2040
राहु 15/03/2036	गुरु 09/08/2037	शनि 01/05/2038	बुध 26/12/2039	केतु 30/06/2040
गुरु 31/05/2036	शनि 30/10/2037	बुध 31/05/2038	केतु 30/01/2040	शुक्र 31/07/2040

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल 31/07/2040 27/12/2040	मंगल - राहु 27/12/2040 14/01/2042	मंगल - गुरु 14/01/2042 21/12/2042	मंगल - शनि 21/12/2042 30/01/2044	मंगल - बुध 30/01/2044 26/01/2045
मंगल 08/08/2040 राहु 31/08/2040 गुरु 20/09/2040 शनि 13/10/2040 बुध 03/11/2040 केतु 12/11/2040 शुक्र 07/12/2040 सूर्य 14/12/2040 चंद्र 27/12/2040	राहु 22/02/2041 गुरु 15/04/2041 शनि 14/06/2041 बुध 08/08/2041 केतु 30/08/2041 शुक्र 02/11/2041 सूर्य 21/11/2041 चंद्र 23/12/2041 मंगल 14/01/2042	गुरु 01/03/2042 शनि 24/04/2042 बुध 11/06/2042 केतु 01/07/2042 शुक्र 27/08/2042 सूर्य 13/09/2042 चंद्र 11/10/2042 मंगल 31/10/2042 राहु 21/12/2042	शनि 23/02/2043 बुध 22/04/2043 केतु 15/05/2043 शुक्र 22/07/2043 सूर्य 11/08/2043 चंद्र 14/09/2043 मंगल 07/10/2043 राहु 07/12/2043 गुरु 30/01/2044	बुध 21/03/2044 केतु 12/04/2044 शुक्र 11/06/2044 सूर्य 29/06/2044 चंद्र 29/07/2044 मंगल 19/08/2044 राहु 13/10/2044 गुरु 30/11/2044 शनि 26/01/2045
मंगल - केतु 26/01/2045 24/06/2045	मंगल - शुक्र 24/06/2045 25/08/2046	मंगल - सूर्य 25/08/2046 30/12/2046	मंगल - चंद्र 30/12/2046 31/07/2047	राहु - राहु 31/07/2047 13/04/2050
केतु 04/02/2045 शुक्र 01/03/2045 सूर्य 08/03/2045 चंद्र 21/03/2045 मंगल 29/03/2045 राहु 21/04/2045 गुरु 11/05/2045 शनि 03/06/2045 बुध 24/06/2045	शुक्र 03/09/2045 सूर्य 25/09/2045 चंद्र 30/10/2045 मंगल 24/11/2045 राहु 27/01/2046 गुरु 25/03/2046 शनि 31/05/2046 बुध 31/07/2046 केतु 25/08/2046	सूर्य 31/08/2046 चंद्र 11/09/2046 मंगल 18/09/2046 राहु 07/10/2046 गुरु 24/10/2046 शनि 14/11/2046 बुध 02/12/2046 केतु 09/12/2046 शुक्र 30/12/2046	चंद्र 17/01/2047 मंगल 30/01/2047 राहु 03/03/2047 गुरु 31/03/2047 शनि 04/05/2047 बुध 03/06/2047 केतु 15/06/2047 शुक्र 21/07/2047 सूर्य 31/07/2047	राहु 26/12/2047 गुरु 06/05/2048 शनि 09/10/2048 बुध 26/02/2049 केतु 24/04/2049 शुक्र 06/10/2049 सूर्य 24/11/2049 चंद्र 14/02/2050 मंगल 13/04/2050
राहु - गुरु 13/04/2050 05/09/2052	राहु - शनि 05/09/2052 13/07/2055	राहु - बुध 13/07/2055 30/01/2058	राहु - केतु 30/01/2058 17/02/2059	राहु - शुक्र 17/02/2059 17/02/2062
गुरु 08/08/2050 शनि 24/12/2050 बुध 27/04/2051 केतु 18/06/2051 शुक्र 11/11/2051 सूर्य 25/12/2051 चंद्र 07/03/2052 मंगल 27/04/2052 राहु 05/09/2052	शनि 17/02/2053 बुध 15/07/2053 केतु 13/09/2053 शुक्र 06/03/2054 सूर्य 27/04/2054 चंद्र 23/07/2054 मंगल 21/09/2054 राहु 24/02/2055 गुरु 13/07/2055	बुध 22/11/2055 केतु 15/01/2056 शुक्र 19/06/2056 सूर्य 04/08/2056 चंद्र 21/10/2056 मंगल 14/12/2056 राहु 03/05/2057 गुरु 04/09/2057 शनि 30/01/2058	केतु 21/02/2058 शुक्र 26/04/2058 सूर्य 15/05/2058 चंद्र 16/06/2058 मंगल 08/07/2058 राहु 04/09/2058 गुरु 25/10/2058 शनि 25/12/2058 बुध 17/02/2059	शुक्र 19/08/2059 सूर्य 12/10/2059 चंद्र 12/01/2060 मंगल 16/03/2060 राहु 27/08/2060 गुरु 20/01/2061 शनि 13/07/2061 बुध 15/12/2061 केतु 17/02/2062

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

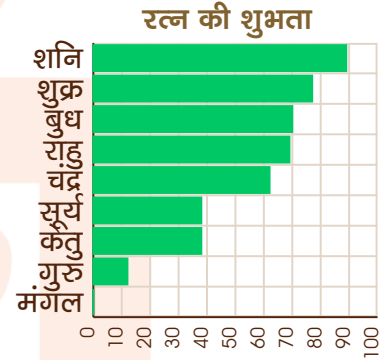
rs96531@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	89%	धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	77%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
पन्ना	बुध	70%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
मोती	चंद्र	62%	सुख, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	38%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश
लहसुनिया	केतु	38%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	12%	पराक्रम हानि, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	31/07/2030	56%	69%	0%	70%	25%	64%	77%	56%	12%
चंद्र	31/07/2040	50%	75%	0%	77%	12%	77%	89%	56%	12%
मंगल	31/07/2047	50%	69%	0%	58%	25%	77%	89%	56%	50%
राहु	31/07/2065	12%	50%	0%	70%	12%	83%	95%	81%	12%
गुरु	31/07/2081	50%	69%	0%	58%	38%	64%	89%	69%	38%
शनि	01/08/2100	12%	50%	0%	77%	12%	83%	100%	75%	12%
बुध	01/08/2117	50%	50%	0%	83%	12%	83%	89%	69%	38%
केतु	01/08/2124	12%	50%	0%	70%	12%	83%	77%	56%	56%
शुक्र	01/08/2144	12%	50%	0%	77%	12%	89%	95%	75%	50%

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, गोमेद एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्भीक और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते हैं। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपत्ति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते हैं। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीश भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना धारण करने से आपके विवेक भाव में वृद्धि होगी। तथा रत्न प्रभाव से आप अपने परिश्रम के बल पर सफलता अर्जित करेंगे। आप आत्मविश्वासी और पुरुषाधी बनेंगे। यह रत्न आपको स्वभाव से तार्किक और विनोदी बनाएगा। शत्रुओं की अधिकता होने पर भी आप उन्हें शांत रखने में सफल रहेंगे। पन्ना रत्न आपकी मित्रता किसी बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति से करा सकता है। रत्न शुभता से आप अच्छे कार्यों पर व्यय करेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको उद्भोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है। तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यों से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूठी में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्त के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अहंकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का 90८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती आपको अपने कुल में यथायोग्य अधिकार देगा। आपको वाहनों का सुख

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

देगा। रत्न की शक्तियां आपमें परोपकार की भावना का विकास करेंगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। माता की ओर से संपत्ति प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही यह मोती रत्न आपको माता के द्वारा भाग्योदय देगा। आजीविका क्षेत्र में योग्यता अनुसार सम्मान और पद की प्राप्ति होगी। मोती रत्न से आपको घर का सुख प्राप्त होगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र आपके लिए पराक्रमेश है। चंद्र ग्रह की शुभता बढ़ाने और इनके साथ बन रहे अशुभ योगों को निष्फल करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न आपके पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहनों से सहयोग, विद्या-बुद्धि एवं संतान सुख दे सकता है। शुभ मोती आपको प्रसन्नचित्त रख सकता है। मोती रत्न से भाग्योदय तथा धर्मपालन में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। तृतीयेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र ग्रह को शक्तिशाली बना सकते हैं।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके रोग, ऋण और शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। यह रत्न आपके तेज में कमी कर सकता है। नैनिहाल पक्ष से आपके संबंध खराब हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपकी माता के कष्ट बढ़ सकते हैं। अत्यधिक कठोरता आपके स्वभाव का अंग बन सकती है। माणिक्य रत्न नौकरी के क्षेत्र में परेशानियां दे सकता है। उच्चाधिकारियों से आपके संबंध खराब कर सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बन सकते हैं। इस रत्न को धारण करने के बाद आपके जीवन के उतार चढ़ाव बढ़ सकते हैं। नैनिहाल पक्ष के लोगों को कष्ट मिल सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। कुंडली में बन रहे योग सूर्य की शुभता में कमी कर रहे हैं। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप अपने यश, कीर्ति व प्रसिद्धि के लिए विशेष सतर्क हो सकते हैं। आपको वाहनों के द्वारा कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। भूमि एवं भवन के विषय आपकी परेशानियां बढ़ा सकते हैं। आपमें संवेदनाओं की कमी हो सकती है। हृदय की कठोरता समाज में आपके सम्मान में कमी कर

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

सकती है। हृदय संबंधी रोगों का आपको सामना करना पड़ सकता है। रत्न की प्रतिकूलता आपके विद्या क्षेत्र में भी बनी हुई है। अपने पद, सम्मान और आर्थिक स्थिति को लेकर आपमें अहंकार भाव आ सकता है। आपको भौतिक सुख-सुविधाओं के सुख भोगने के अवसर पर्याप्त नहीं मिल पाएंगे।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु लहसुनिया रत्न धारण करने से आप सत्यभाव से विमुख हो सकते हैं। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर हो सकते हैं। कार्यों में आपके द्वारा लापरवाही हो सकती है। यह रत्न आपके जीवन के अनेक प्रकार के दुःखों का कारण बन सकता है। दूसरों की आलोचना में आप आनंद का अनुभव करेंगे। मित्रों के द्वारा आपको कई प्रकार के कष्ट मिल सकते हैं। आपको आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। आपके अंदर उत्साह की कमी हो सकती है। पैतृक धन का विनाश हो सकता है। लहसुनिया रत्न से धनार्जन के लिए आपको देश-विदेश भटकना पड़ सकता है। आर्थिक विपन्नता आपको परेशान कर सकती है।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः पुखराज रत्न धारण करने पर आपका साहस भाव और पहल क्षमता कम हो सकती है। आपको अपनी शिक्षा का लाभ कम ही मिल पाएगा। आप अपनी योग्यता का पूरा लाभ नहीं उठा पायेंगे। भाग्य, आय का अनुकूल न होना आपमें विवेक की कमी कर सकता है। यह रत्न आपके सुख-सौभाग्य और सहोदर भ्राताओं से प्राप्त सुख में कमी कर सकता है। गुरु रत्न आपकी संकल्पशक्ति में भी कमी कर सकता है। इस रत्न से आपका धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष कमजोर हो सकता है। पुखराज रत्न के प्रभाव से आपके वैवाहिक जीवन में भी उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल छे भव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको प्रसिद्धि की प्रतिकूलता, विद्वानों से शत्रुता, तकनीकी विषयों में अरुचि हो सकती है। अत्यधिक साहस, जोखिम लेने का स्वभाव आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। विरोधियों से कष्ट आपके लिए बने रहेंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बाधित कर सकता है। प्रतियोगिताओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न आपको अधीनस्थों के द्वारा पीड़ित कर सकता है। माता के सुख में कमी के योग बन सकते हैं। मूंगा रत्न आपको रक्त प्रवाह से संबंधित रोग दे सकता है। शक्ति का दुरुपयोग आपके द्वारा हो सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते हैं। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

सूर्य

(18/10/2025 - 31/07/2030)

सूर्य की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, हीरा, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

चन्द्र

(31/07/2030 - 31/07/2040)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, पन्ना, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(31/07/2040 - 31/07/2047)

मंगल की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पन्ना, गोमेद, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(31/07/2047 - 31/07/2065)

राहु की दशा में आपका नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज, लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(31/07/2065 - 31/07/2081)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद, हीरा, पन्ना व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(31/07/2081 - 01/08/2100)

शनि की दशा में आपका नीलम, हीरा, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज, लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(01/08/2100 - 01/08/2117)

बुध की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(01/08/2117 - 01/08/2124)

केतु की दशा में आपका हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

शुक्र
(01/08/2124 - 01/08/2144)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, हीरा, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात् यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक कराये तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग, ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता है।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता है। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।
क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए
आवश्यक हैं।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/10/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

धनार्जन
पराक्रम हानि
सुख हानि
सन्तति
दाम्पत्य कलह

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढदेही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

मंगल

छटेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छटे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुंदर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगी। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुंदर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगी साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकती हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुंदर आकर्षक व्यक्तित्व, विदुषी एवं साहसी महिला होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति धन संग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के प्रति हमेशा चिन्तित रहेंगी फलतः धन संग्रह सामान्यतया आपके पास रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी। साथ ही आप जायदाद आदि पर पूंजी निवेश करेंगी जिससे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होता रहेगा। आपकी पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ अपना समय व्यतीत करेंगी। इसके साथ ही उनकी खुशी तथा खुशहाली के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा पारिवारिक जन भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद प्रिय होंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा बुध इसका स्वामी है अतः आपकी वाणी मृदु तथा प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी मृदुवाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही अपने विचारों को भी कुशलता पूर्वक अभिव्यक्त करेंगी यदि आप यह समझते हैं कि यह विचार अवसर के अनुकूल नहीं है तो आप उसे शीघ्र ही परिवर्तन करने में कोई विलम्ब नहीं करेंगी। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में रहेगी। इसके अतिरिक्त पुरुष वर्ग से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य धातु या रत्नों की भी उपलब्धि होगी। साथ ही धार्मिक या सज्जन लोगों से आप सामान्यतया मित्रता की इच्छुक रहेंगी।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी तथा इनका उपभोग करेंगी। वैभव एवं ऐश्वर्य से भी आप युक्त होंगी परंतु उनका पूर्ण सुख आपको युवावस्था के बाद ही प्राप्त होगा तथा इसके लिए काफी परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ेगा परंतु इसके बाद आप अपना यथोचित स्तर बनाने में समर्थ होंगी तथा समाज में भी आपके प्रभाव एवं आदर की वृद्धि होगी।

चल एवं अचल संपत्ति का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा तथा नानी से भी किंचित चल अचल संपत्ति के प्राप्त होने की पूर्ण संभावना बनेगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आएगी लेकिन जीवन में आपको विवादित सम्पत्ति या जायदाद का क्रय-विक्रय नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः इस दृष्टि से आपको पूर्ण सतर्क रहना चाहिए।

आप युवावस्था के बाद स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से ही उत्तम घर को प्राप्त करने में समर्थ होंगी। इससे पूर्व आपको किसी सामान्य घर में निवास करना पड़ेगा तथा यह किसी मध्यम कालोनी में होगा लेकिन बाद में आप अच्छी कालोनी में गृह निर्माण करेंगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगी। लेकिन पड़ोसियों से आपके संबंध मधुर अल्प मात्रा में ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यावस्था के बाद ही मिलेगा तथा पहले सामान्य रूप से ही वाहन सुख की प्राप्ति होगी।

आपकी माता शिक्षित महिला होंगी परंतु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव रहेगा इससे यदा कदा अन्य पारिवारिक जन उनसे परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन यह सब अल्पकालिक होगा। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं वात्सल्य का भाव रहेगा तथा समय समय पर आपको अपनी ओर से आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी लेकिन आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है।

आपको प्रारंभ से ही अध्ययन में सफलता प्राप्त करने के लिए काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं में भी परिश्रम से ही आप उत्तीर्ण हो पाएंगे अतः स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अतः यदि स्नातक परीक्षा की अपेक्षा आप किसी तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में परिश्रम करें तो इससे आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी तथा परिश्रम भी अल्प मात्रा में ही करना पड़ेगा। अतः तकनीकी शिक्षा आपके लिए उत्तम एवं अनुकूल रहेगी।

नैसर्गिक पाप ग्रह केतु की सूर्य की राशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको रक्त चाप संबंधी कष्ट का सामना करना पड़ सकता है तथा यदा कदा हृदय रोगों से भी कष्ट की प्राप्ति हो सकती है। अतः आपको चाहिए कि प्रारंभ से ही खान-पान पर विशेष ध्यान दें

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

तथा ऐसी वस्तुओं या पदार्थों का परहेज करें जिससे ये समस्याएं उत्पन्न होती हों। इससे आप वृद्धावस्था में स्वस्थ रहेंगी।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शुक्र भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगी। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगी। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रुचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रुचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगी तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगी। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

शुक्र की नीचस्थ स्थिति की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगी तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगी। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकती हैं तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकती हैं।

पंचमभाव में नीचस्थ शुक्र की स्थिति से सन्तति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परंतु विलंब से ही सही संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी परंतु वे सभी हठी एवं अभिमानी प्रवृत्ति के होंगी। माता पिता का कहना भी कम ही मानेंगे एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी अल्प ही होगा। लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए। क्योंकि वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख में न सही लेकिन दुख में माता पिता का अवश्य ध्यान रखेंगे जिससे आपको किंचित मात्रा में मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी परंतु संतति पक्ष से आपको अधिक अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रुचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर सकेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगी तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यों में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया सप्तम भाव में जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति धनवान एवं अधिक व्ययशील होता है। परन्तु नैसर्गिक शुभ ग्रह एवं जलतत्व युक्त शुक्र के प्रभाव से जातक सुशील संगीत एवं कला प्रिय मधुर भाषी तथा आधुनिक विचारों से युक्त होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव से युक्त बुद्धिमान एवं गुणवान व्यक्ति होंगे तथा आधुनिकता के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगे। उनमें चंचलता का भाव भी होगा एवं प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी। सांसारिक कार्य कलाओं में वह दक्ष होंगे। वह एक शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा आधुनिक तथा पाश्चात्य शास्त्रों में विशेष रुचि रखेंगे। वह कर्तव्य परायण एवं मधुर बोलने वाले होंगे जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

आपके पति गौरवर्ण के सुंदर एवं आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा उनका कद भी सामान्य होगा परन्तु शारीरिक संरचना स्वस्थ सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वृश्चिक राशि में जल तत्व की प्रधानता के कारण उनमें स्थूलता भी आ सकती है अतः पहले से ही व्यायाम या योगादि द्वारा इसे नियंत्रित करना चाहिए। सौन्दर्य के प्रति वह हमेशा आकर्षित रहेंगे तथा सुंदर वस्तुओं संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगे।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी बंधु वर्ग के द्वारा सम्पन्न होगा। सप्तम भाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम विवाह की भी प्रबल संभावना रहती है। विवाह के बाद आप एक दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे तथा सुख दुःख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः आपके संबंधों में मधुरता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी उच्च एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी। फलतः विवाह के समय आपको मायके से प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से भी आपके संबंधों में मधुरता रहेगी एवं उनको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। वे भी आपको पुत्रीवत स्नेह देंगे। साथ ही मायके से आर्थिक एवं नैतिक सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखकर उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से साले एवं सालियों से भी यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी एवं इससे आपके लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही राहु भी मित्र राशि में स्थित होकर दशम भाव में ही है। कुम्भ राशि एवं राहु दोनों वायुतत्व युक्त ग्रह हैं अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र निरंतर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा तथा इसमें आपको समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना कम ही करना पड़ेगा। साथ ही आपका कार्य श्रम साध्य एवं बौद्धिक दोनों ही प्रकार का होगा एवं इसमें स्थायित्व बना रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इससे वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम फैक्टरी, संदेश वाहक तथा राजनीति के क्षेत्र वांछित सफलता एवं उन्नति प्रदान करेंगी। अतः आपको चाहिए उपरोक्त विभागों में ही अपना कार्यक्षेत्र प्रारंभ करें। यदि आप ऐसा करेंगी तो जीवन में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा किसी भी प्रकार के अनावश्यक समस्या एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही उन्नति के शिखर पर पहुंचने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त राजनीति से संबंधित कार्यों में आपको शीघ्र सफलता प्राप्त होगी।

व्यापारिक क्षेत्र में विशिष्ट उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से आपके लिए लोहे, चमड़े का कार्य, फैक्टरी, उद्योग, पेट्रोल पम्प, खनिज पदार्थ का क्रय-विक्रय, प्रेस खेती वागवानी आदि कार्यों या उनके व्यापार से आपको वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। अतः यदि आप व्यापार करना चाहे तो उपरोक्त क्षेत्रों में व्यापारिक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

मित्र एवं योग कारक ग्रह शनि की राशि में दशम भावस्थ राहु के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही आप अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपके यश एवं प्रभाव में वृद्धि होगी। राजनीति में आप सम्मानीय पद अर्जित करेंगी तथा उच्च नेताओं एवं उच्चाधिकारियों से सम्पर्क स्थापित करके अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करेंगी। इसके साथ ही अन्य सामाजिक संस्थाओं क्लबों आदि के भी आप कोई वरिष्ठ पदाधिकारी हो सकती हैं। राहु के प्रभाव से आपको वांछित यश प्रतिष्ठा तथा सम्मान मध्य अवस्था के बाद ही प्राप्त होगा।

आपके पिता जी एक तेजस्वी पराक्रमी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा उनके प्रभाव को सभी लोग स्वीकार करेंगे। साथ ही अन्य जनों के प्रति उनके मन में सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा के विषय में वे पूर्ण सतर्क होंगी। आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नई सफलताएं एवं उन्नति उन्हीं के प्रभाव से प्राप्त करेंगी। आपका भी उनके प्रति मन में श्रद्धा तथा सम्मान का भाव होगा परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद के कारण संबंधों में अनावश्यक तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान के शनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वाब्द उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वाब्द सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वाब्द अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वाब्द में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वाब्द अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निर्धारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुर्घटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संघर्ष भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(18/10/2025 - 31/07/2030)

सूर्य की महादशा 18/10/2025 को आरम्भ होगी 6 वर्षों के बाद 31/07/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य षष्ठम भाव में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, ओज, साहस, पराक्रम और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है जबकि षष्ठम भाव स्वास्थ्य, सेवा, मता की ओर के सम्बन्धों, प्रतिद्वन्द्वियों और ऋण का सूचक है। अतः इस दशा में आपको प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय, ऋण से मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा अच्छी नौकरी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपको उत्तम ओजस्विता और उत्साह की प्राप्ति होगी। इस दशा में आप सभी बड़े रोगों से मुक्त होंगे। आप उत्तम स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अपने उत्तम स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रखने के लिये आपको सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आपको हर क्षेत्र में अतिशयता का परित्याग करना चाहिए। आपको सरदर्द, प्रदाह आदि हो सकते हैं। आपकी उपेक्षा के कारण आँख तथा हृदय से संबंधित रोग हो सकते हैं।

अर्थ :

इस दशा में आप नौकरी से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको मुकदमों में सफलता मिलेगी। आप ऋण से मुक्त होंगे। साझेदारों से धन की प्राप्ति का संकेत भी है। आप स्वभाव से उदार हैं, आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन होगा। मातृ-पक्ष से भी धन की प्राप्ति हो सकती है। अगर फिजूलखर्ची पर नियंत्रण करें तो आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा।

व्यवसाय :

आपको प्रतिद्वन्द्वियों और प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके लिये नौकरी उत्तम है। स्वतंत्र व्यवसाय कम लाभदायक होगा। आप एक अच्छे नेता हैं और किसी संस्था, निगम या बड़े संगठन के प्रधान हो सकते हैं। सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाएं आपकी जीवन-वृत्ति के लिये उपयुक्त हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अन्न तथा उपकरणों से सम्बन्धित व्यापार लाभदायक हो सकता है। क्रीड़ा सामग्री के व्यवसायियों को लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों के लिये यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान मान-सम्मान तथा आमदनी में वृद्धि होगी और इच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसायियों व्यापारियों का भाग्योदय होगा, आमदनी अच्छी होगी और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। लाभ के संकेत हैं। जीवन-वृत्ति, व्यवसाय और व्यापार में प्रगति के लिये यह दशा उत्तम है।

परिवार (कुटुम्ब) :

अगर आप अपनी हठधर्मिता और आक्रामकता पर नियंत्रण रखें तो परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। बच्चों तथा जीवन साथी से मतभेद हो सकते हैं। धैर्य तथा सतर्कता

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

की आवश्यकता है। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी और उन्हें सुख और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। अप्रत्याशित प्रगति होगी और अकस्मात लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

राजनीति, नागरिकशास्त्र तथा जन कल्याण से सम्बन्धित योजनाओं में भी आपकी रुचि होगी।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

**अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(18/10/2025 - 18/08/2026)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 18/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 18/10/2025 को प्रारंभ होकर 18/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपकी तीर्थयात्रा हो सकती है या धर्म में रुचि होगी। आप अपने कार्य-व्यवसाय में अधिक समय व्यतीत करेंगे जिससे अन्य गतिविधियों को हानि हो सकती है। आपको अचल संपत्ति और वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। सरकार से भी लाभ होगा।

जीवनसाथी के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। पिता को धन लाभ होगा। माता को घरेलू सुख रहेगा और भौतिक सुख उपलब्ध होंगे। छोटे भाई-बहनों के जीवन में अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के अवांछित खर्च और व्यर्थ की यात्राओं का योग है। आपकी संतान स्पर्धाओं में सफल रहेगी। उनकी उन्नति और समृद्धि का भाग्यशाली समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो समय बहुत उत्तम है। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को समृद्धि प्राप्त होगी। राजनीतिज्ञों को सफलता मिलेगी।

घुटनों की देखभाल ठीक से करें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरव के रूप में शिवजी की पूजा शनिवार को करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(18/08/2026 - 07/06/2027)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 18/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 18/08/2026 को प्रारंभ होकर 07/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों, संबंधियों और पड़ोसियों से सम्मान प्राप्त होगा। वाक्शक्ति द्वारा लाभ हो सकता है। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं हो सकती हैं। आप व्याख्यान दे सकते हैं। अध्यात्म में रुचि रहेगी। अनुबंधों और भागीदारी के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। आकांक्षाओं की पूर्ति, सम्मान, उच्चाधिकारियों की प्रशंसा और धन में वृद्धि की संभावना है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार का समय भाग्यशाली रहेगा। आपके पिता को भागीदारी से लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के शुभ कार्यों में खर्च बढ़ सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान को मान-सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल पर सुविधाएं उत्तम होंगी। परामर्शदाताओं के स्पर्धी निर्बल रहेंगे। व्यापारी चहुंमुखी आय प्राप्त करेंगे।

कान, शरीर के ऊपरी भाग और स्नायुतंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(07/06/2027 - 19/05/2028)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 07/06/2027 को प्रारंभ होगी और 19/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि बढ़ेगी, धन का संचय होगा, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। निवेश से लाभ होगा। शिशु का जन्म हो सकता है। धर्म में रुचि होगी। संतान के साथ मामूली मतभेद हो सकते हैं। आपको मामूली बीमारी हो सकती है। वसीयत आदि से अप्रत्याशित धन मिल सकता है। आपके बहुत से कार्य समाजसेवार्थ होंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा। आपके पिता को प्रयास से सफलता मिलेगी। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा। उनके लिए लोकप्रियता, समृद्धि और यात्रा का योग है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। उनका विवाह हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - बुध
(19/05/2028 - 25/03/2029)

आपकी सूर्य की महादशा 18/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 19/05/2028 को प्रारंभ होकर 25/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको मानसिक और घरेलू सुख उपलब्ध रहेंगे और धन का लाभ होगा। कार्यों में सफलता, प्रसिद्धि और लोकप्रियता हासिल होंगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामापक्ष के लोग भाग्यशाली

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

रहेंगे। आपका कोई शत्रु नहीं होगा। आयात-निर्यात आपके लिए लाभकारी हो सकता है। ऋण प्राप्त हो सकता है और पुराना कर्ज अदा हो सकता है।

आपके जीवनसाथी के विदेश से संपर्क, यात्राएं और धनव्यय हो सकते हैं। पिता की रुचि ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म में होगी; उन्हें व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेंगे। माता को सुख-सुविधाएं रहेंगी। भाई-बहनों को जायदाद प्राप्त हो सकती है, संभवतः माता पक्ष से। आपकी संतान का समय भाग्यशाली रहेगा। वे भाषण देने और विचारों के आदान-प्रदान में पटु होंगे। आपके सेवारत बच्चे धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल, समृद्ध होंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली होंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से धन मिलेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। त्वचा, हृदय और तंत्रिकाओं के रोगों से बचाव करें। बुध के मंत्र का जाप करें और हरे पदार्थों का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - केतु (25/03/2029 - 31/07/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 18/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/03/2029 को आरंभ होकर 31/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में वाहन सुख मिलेगा। माता-पिता से सहायता मिलेगी और मित्रों से लाभ होगा। जायदाद से धनार्जन होगा। कार्य-व्यवसाय में असंतोष हो सकता है क्योंकि प्रगति के अवसर कम हो सकते हैं। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं।

आप में साहस और ऊर्जा भरूपर रहेंगे ओर प्रसिद्धि प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं या कोई लंबी यात्रा हो सकती है।

जीवनसाथी को समाज, कार्य-व्यवसाय में प्रगति प्राप्त होगी। पिता के धन में वृद्धि होगी; साझेदार से लाभ होगा। आपकी माता का ध्यान धर्म में लगेगा। भाई-बहनों के शत्रु परास्त होंगे; इच्छाओं की पूर्ति होगी।

आपकी संतान पर मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ सकता है। उनकी भाग्यशाली यात्राएं हो सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारों से लाभ होगा। व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

छाती, ज्वर और संक्रमण आदि से सतर्क रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए श्वान को भोजन दें या भूरे श्वान को पालें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

**महादशा :- चन्द्र
(31/07/2030 - 31/07/2040)**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 31/07/2030 को आरम्भ और 31/07/2040 को समाप्त होगी।

चन्द्र मानसिक शान्ति और सुख का कारक है इसलिए दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति, समृद्धि तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होगी। इस अवधि में आप पूरी तरह सक्रिय रहेंगे, आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और धर्म-ईश्वर की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुखी, शान्तिपूर्ण व उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों और दैनिक गतिविधियों को पूरे उत्साह के साथ पूरा करेंगे।

किसी बड़े रोग अथवा किसी अप्रिय दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। गाड़ी और जमीन-जायदाद के क्रय की सम्भावना है। आपके बैंक बैलेन्स में पर्याप्त वृद्धि होगी और आप सुख-सुविधा के साधनों पर व्यय करेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

व्यवसाय :

नये विषयों और कार्यों की खोज में आपकी रुचि होगी। फलस्वरूप आपकी रचनात्मकता में वृद्धि होगी जिसकी आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे। आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति मज़बूत होगी और सम्मान में वृद्धि तथा पद में उन्नति होगी। आपको यश और ख्याति प्राप्त होगी और आपका सर समाज में ऊँचा रहेगा। आपकी कुण्डली में यात्रा का संकेत है जो आपकी भलाई के लिए होगी। आपको यात्रा के अनेक अवसर मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक है जो परिवार, सम्पत्ति, माता तथा वाहन का द्योतक है। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। सगे-संबंधियों तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। मामा या नाना के साथ भी आपका संबंध मधुर रहेगा और उनसे लाभ मिलेगा।

इस दशा के दौरान आपके मामा को भी लाभ होगा तथा संभव है कि आपके और आपके मामा के बीच परस्पर मधुर संबंध के कारण आप दोनों को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

नये विषयों के अध्ययन के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है। आप कोई पाठ्यक्रम आरम्भ कर सकते हैं अथवा अपने ज्ञान में सुधार के लिए अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

**अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(31/07/2030 - 01/06/2031)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 31/07/2030 को प्रारंभ होकर 31/07/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 31/07/2030 को प्रारंभ होकर 01/06/2031 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी राशि में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

मन के कारक चंद्र के चतुर्थ भाव में स्थित होने से आपके माता-पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचल संपत्ति और वाहनसुख का योग है। नये आवास या संपत्ति का उपयोग कर सकते हैं या नया वाहन खरीद सकते हैं। शैक्षणिक योग्यता में वृद्धि के लिए किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र के 11000 जाप करें। केवल भावनाओं में बहकर कार्य न करें, बुद्धि का प्रयोग करें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com